अंक 34

वर्ष-9वां

अप्रैल-जून 2015

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

संपादक - विराग-शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

माँ की सीख

ईर्या की स्कूल की परीक्षायें समाप्त हो गईं थीं, वह दिन भर अपना समय खेलकूद में बिताने लगी। उसे खेलने में बहुत आनंद आता था। खासकर मिट्टी से घर बनाकर वह बहुत खुश होती थी। खेलने के बाद वह अपने घर गई तो उसकी माँ ने पूछा - ईर्या! तुम कहाँ गईं थीं ? ईर्या ने मुस्कराते हुये कहा - खेलने....।

माँ ने उसे समझाते हुये कहा - बेटा! सारा समय खेलने में ही बरबाद मत कर देना। तो फिर मैं क्या करूँ मम्मी? धार्मिक कहानियों की पुस्तक पढ़ना, धार्मिक बालगीतों, कहानियों की वीडियो सीडी देखना और भजन, भक्तियाँ, सूत्र याद करना।

ठीक है मम्मी। मैं इन छुट्टियों में ये सारे काम करूँगी। थैंक्यू प्यारी मम्मी।

- विराग शास्त्री

आध्यात्मिक, तात्विक,धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

JULY - SEPT. 2014

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर

डिजाइन/ ग्राफिक्स
गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा
श्रीमती आरती जैन, विले पार्ले, मुम्बई
श्री जैन बहादुर जैन, कानपुर

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
"चहकती चेतना"
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 09373294684
chehaktichetna@yahoo.com

क्र.	विषय	पेज
1.	सूची	1
2.	संपादकीय	2
3.	तीर्थक्षेत्र - गोलाकोट	3
4.	कविता - समझदार चेतन	4
5.	निस्पृह गुरुदेवश्री	5
6.	मीनाक्षी मंदिर...	6
7.	वर्णी जी का जिनधर्म प्रेम कैसे ..?	7
8.	मुनिराज भगवंतो की पिछी...	8
9.	24 तीर्थंकर और	9
10.	मांस की कीमत	10-11
11.	पद्मावती की पूजन.....	12
12.	अब नहीं उड़ाउंगा...	13
13.	कृष्णा का देश प्रेम...	14-15
14.	कविता	16
15.	कलिंग चक्रवर्ती सम्राट	17
16.	सूर्यमित्र बना भगवान	18-19
17.	धार्मिक पहेली	20
18.	सौंदर्य अभिमान	21
19.	ऐसे नहीं बोलूंगी	22-23
20.	कविता - पेप्सी	24
21.	सुख कहाँ....	25
22.	समाचार कोना	26-27
23.	चहकती चेतना फार्म	28
24.	कार्यक्रम की झलकियाँ - पौंडूर	29
25.	बचत	30
26	रास्ता बताओ	31
27	टाइम टेबिल	32

सदस्यता शुल्क - 400 रु. (तीन वर्ष हेतु)
1200 रु. (दस वर्ष हेतु)

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप "चहकती चेतना" के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से "चहकती चेतना" के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

संपादकीय

प्यारे बच्चो और उनके मम्मी-पापा,

आप सभी को जय जिनेन्द्र। आपकी प्यारी पत्रिका चहकती चेतना को आपका भरपूर स्नेह प्राप्त हो रहा है। यह पत्रिका का नवमा वर्ष है। हमारा उद्देश्य आपको जैन दर्शन की महत्वपूर्ण जानकारी के साथ आपके जीवन में संस्कार और सदाचार की जानकारी देना है। इसके अनेक सफल परिणाम सामने आये हैं।

वर्तमान परिवेश में बच्चे और युवा आधुनिक संसाधनों में इतने व्यस्त हैं कि उन्हें हित और अहित के बारे में सोचने का अवकाश ही नहीं है।

व्हाट्स एप तो युवाओं की प्राण बन गया है। दिन भर आते मैसेज और फोटो पर हम गौर करें तो सिर्फ समय बरबादी के अलावा कुछ नहीं। लेकिन युवा इसे मनोरंजन मानता है।परन्तु शायद ये कम लोग ही जानते होंगे कि हम तो वैसे ही दिन भर पापों के कार्यों में लिप्त रहते हैं और इन अनावश्यक संदशों के आदान-प्रदान से होने वाले आर्त-रौद्र परिणामों से और अधिक पाप बांधते हैं।

इन संदेशों में 2 प्रतिशत मैसेज ही धर्म सम्बन्धी होते हैं और इन धार्मिक मैसेज को जीवन में अमल करने वाले शायद ही मिलें परन्तु दूसरे ग्रुप में भेजना अपना नैतिक कर्तव्य मानते हैं। आज व्हाट्स एप के मंच पर हर व्यक्ति उपदेशक के रोल में आ गया है और एक ही मैसेज सब ग्रुपों में फारवर्ड होता है तो उससे होने वाली बरबादी का क्या कहना...।

मेरा तो आप सबसे विनम्र आग्रह है कि हम अपने जीवन में अधिक से अधिक धर्म से जुड़ें और पापों से बचें। आज कदम कदम पर मन को चंचल करने वाले भौतिक साधन हमें आकर्षित कर रहे हैं। मेले में माँ के साथ गया हुआ बेटा भीड़ बढ़ने पर अपनी माँ की उंगली जोर से पकड़ता जाता है, उसे भय है कि मेले की भीड़ में यदि माँ का हाथ छूट गया तो बहुत मुश्किल हो जायेगी, मुझे अनेक संकटों का सामना करना पड़ेगा। ऐसे ही संयोगों की भीड़ में हमें माँ जिनवाणी का आश्रय और अधिक मजबूती से लेना होगा यदि जिनवाणी के मंत्रों का साथ छूट गया तो हमें चार गति के भयंकर संकटों का सामना करना पड़ेगा। हम माँ जिनवाणी के महान सिद्धान्तों का अनुसरण कर अपने जीवन का सार्थक करें ऐसी मंगल भावना है।

अहंकारी व्यक्ति बहरा होता है वह किसी की नहीं सुनता।

अतिशय क्षेत्र

गोलाकोट

मध्यप्रदेश के शिवपुरी जिले की खनियांधाना तहसील से 10 किमी की दूरी पर स्थित अतिशय क्षेत्र गोलाकोट अत्यंत सुरम्य और पवित्र स्थान है। विध्यांचल पर्वत के प्राकृतिक वातावरण में स्थित इस क्षेत्र पर चौथे काल की भगवान की आदिनाथ की मनोहारी प्रतिमा के साथ अनेक प्रतिमायें विराजमान हैं। यहाँ पर दो जिनमंदिर स्थित हैं। प्राप्त प्रमाणों के अनुसार जिनमंदिर में स्थापित अनेक प्रतिमायें भगवान महावीर के समय पूर्व की हैं। अनेकों जनश्रुतियों के अनुसार अनेक बार जैन धर्म के विरोधियों ने प्रतिमायें तोड़ने का प्रयास किया परन्तु वे सफल नहीं हुये और रोग से पीड़ित हो गये।

गोलाकोट से सिद्धक्षेत्र थूवोनजी 85 किमी, अतिशय क्षेत्र चंदेरी 60 किमी, सिद्धक्षेत्र सोनागिरि 130 किमी की दूरी पर स्थित हैं। समीपवर्ती ग्राम खनियांधाना के चेतनबाग में अत्यंत विशाल नन्दीश्वर जिनालय अत्यंत दर्शनीय है।

गोलाकोट संपर्क सूत्र - 07494-235419, 235670, 09926586990

खनियांधाना - 9926730232

नंदीश्वर द्वीप खनियांधाना

समझदार चेतन

आलू बोले हमको खा लो,
हम मोटा कर देंगे।
गाजर बोले खाये हमें जो,
खूब बड़े कर देंगे।
चेतन राजा बोला इनसे
मैं तुमको न खाऊँगा।
जिनवाणी अभक्ष्य बताये,
मैं ना पाप कमाऊँगा।
भक्ष्य शुद्ध भोजन करूँ मैं,
गीत प्रभु के गाऊँगा।।

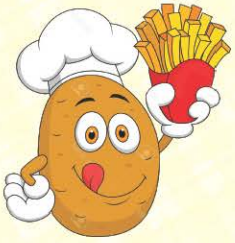

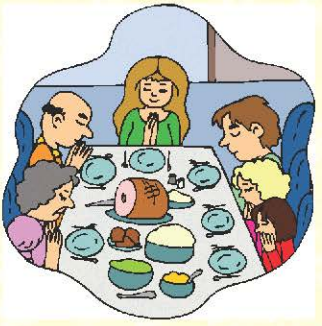

निस्पृह गुरुदेवश्री

अहमदाबाद निवासी श्री हेमेन्द्र शाह 1962 में सोनगढ़ गये और वहाँ 8 दिन रहकर गुरुदेवश्री की विभिन्न मुद्राओं से फोटो खींचे। एक दिन गुरूदेवश्री अपने कमरे में ध्यान कर रहे थे, उस समय उनके कमरे की खिड़की खुली थी, वहाँ से हेमेन्द्रभाई ने ध्यान मग्न गुरूदेवश्री की फोटो ली।

1967 में रूस में एक फोटो प्रतियोगिता हुई। अनेक देशों के संत-महात्माओं के 3-3 फोटो मंगाये। लगभग 5000 फोटो एकत्रित हुये और रूस, अमेरिका, ब्रिटेन के जजों ने 5 दिनों तक सभी फोटो को बारीकी से देखने के बाद गुरूदेवश्री की ध्यान मुद्रा वाले फोटो को प्रथम स्थान दिया।

कुछ दिन बाद हेमेन्द्रभाई ने गुरूदेवश्री के अनन्य शिष्य श्री रामजी भाई बापू को फोटो दिखाकर पुरस्कार मिलने की बात बताई तो उन्होंने गुरूदेवश्री को इसकी जानकारी दी। परन्तु निस्पृह गुरूदेवश्री ने फोटो एक ओर रखकर जिनेन्द्र भगवान की वीतराग मुद्रा याद करने लगे। ऐसे थे गुरुदेव ।

गुरूदेवश्री के निकटवर्ती स्व. श्री शांतिभाई शाह, राजकोट की व्यक्तिगत डायरी से प्राप्त

आदमी

एक सेठ जी अपने दुकान पर बैठे थे। तभी एक व्यक्ति आया और बोला - सेठजी ! बहुत प्यास लगी है थोड़ा पानी पिला दीजिये।

सेठजी बोले - अभी दुकान पर आदमी नहीं है। इतना कहकर वे मोबाइल पर किसी से बात करने लगे। थोड़ी देर बाद वह व्यक्ति फिर से बोला- सेठजी ! बहुत प्यास लगी है, पानी पिला दीजिये।

सेठजी ने थोड़ा जोर से कहा - तुम्हें बोला ना कि दुकान पर कोई आदमी नहीं है। जब आयेगा तब पिला देगा।

वह प्यासा व्यक्ति बड़े प्यार से बोला - सेठजी! थोड़ी देर के लिये आप ही आदमी बन जाइये ना.....।।

इतना सुनकर सेठ कुछ बोलने लायक ही नहीं बचा।

दक्षिण भारत का

मीनाक्षी मंदिर जैन मंदिर है.....

प्राचीन समय में पाण्ड्य देश में जैन राजा वीर पांड्य का पुत्र कुल पांड्य राज करता था। वह जैनधर्म छोड़कर शैव ब्राह्मण हो गया। उसका मंत्री मल्लि पण्डित जैन था। वह दो भाषाओं का का जानकार कवि था। एक पागल हाथी को वश में करने के कारण राजा ने उसका नाम हस्ति मल्लिसेन रख दिया। कुल पांड्य राजा ने मल्लिसेन को शैव धर्म में परिवर्तित करने का बहुत प्रयास किया। जब उसे धर्मपरिर्वतन के लिये बहुत मजबूर किया जाने लगा तो वह अपने पुत्र और कुछ मित्रों के साथ राज्य छोड़कर केरल में जाकर बस गया।

कुल पांड्य ने पांड्य देश के 985 जैन मंदिरों को नष्ट कर दिया, इनमें से दक्षिण मदुरा में ही 50 जैन मंदिर थे। राजा ने पांड्य देश के कुल देवता भगवान नेमिनाथ की प्रतिमा को छिपा दिया ओर नेमिनाथ की शासन देवी कुष्मांडिनी को मीनाक्षी बना दिया तबसे वह मंदिर मीनाक्षी मंदिर कहलाने लगा और आज वह दक्षिण भारत का प्रसिद्धशैव मंदिर है।

- सिद्धचतुर्दशी लेखक भैया भगवतीदासजी
डॉ.ऊषा जैन द्वारा श्री सुनहरी लाल जैन
अभिनन्दन ग्रन्थ में संकलित 1983-पृष्ठ 184

ईर्या आपका जन्म यह, चिन्तामणि सम जान ।
कार्य होय इस जनम में, पद पाओ निर्वाण ।।

ईर्या विराग जैन, जबलपुर 27 अप्रेल 2015

कल्याण के कारणों में सत्समागम और ज्ञानाभ्यास मुख्य हैं।

वर्णीजी का जिनधर्म प्रेम कैसे ?

बुन्देलखण्ड के क्षुल्लक संत गणेशप्रसाद वर्णी का जिनधर्म के प्रचार-प्रसार में बहुत बड़ा योगदान है। उन्होंने मेरी जीवन गाथा में अपने जीवन के अनेक संस्मरणों का उल्लेख किया है। वे लिखते हैं -

मेरा जन्म 1931 में ललितपुर के हसेरे गांव में हुआ। मेरा परिवार जाति से असाटी वैष्णव था । मैं बचपन से ही अपने पिता के साथ राम मंदिर में रामायण पाठ सुनने के लिये जाता था। मेरे गांव में 150 दिगम्बर जैन परिवार थे। मेरे घर के सामने एक दिगम्बर जैन मंदिर भी था और मोहल्ले के पूरे परिवार जैन थे। जैनियों के संगति के कारण पिताजी का आचरण जैनियों के समान हो गया। मेरे पिता रात्रि भोजन नहीं करते थे।

सामने के जैन मंदिर में चबूतरे पर प्रतिदिन जैन पुराण पर प्रवचन होता था। मैं भी उसे सुनने जाता था। दस वर्ष का था तब एक दिन पुराण में रावण के परस्त्री त्याग का प्रकरण आया तो अनेक भाईयों ने परस्त्री त्याग का नियम लिया और मैंने रात्रि भोजन का त्याग कर दिया, बस इसी नियम ने मुझे जैनी बना दिया।

एक दिन की बात है, मेरे विद्यालय के मन्दिर में रात्रि में पेड़े बांटे गये तो मैंने लेने से मना कर दिया और मैंने अपने गुरुजी को कह दिया कि मेरा रात्रि भोजन त्याग है। यह सुनकर गुरुजी बहुत नाराज हुये।

मेरे गुरुजी हुक्का पीते थे मैं उनके हुक्के में तम्बाखू भरता था। जिससे बहुत दुर्गन्ध आती थी। एक दिन तम्बाखू भरते समय मेरा हाथ जल गया तो मैंने हुक्का जमीन पर पटककर तोड़ दिया और गुरुजी को कहा - गुरुजी! आप ऐसा दुर्गन्ध वाला पानी पीते हैं। मैंने उसे तोड़ दिया जो करना आप कर लें।

गुरुजी ने प्रसन्न होकर कहा - तुमने आज अच्छा काम किया। आज से मैं कभी हुक्का नहीं पियूँगा।

इस तरह मैं जैन धर्म की अनेक बातों से प्रभावित होकर आगे बढ़ता रहा।

साभार - मेरी जीवन गाथा
लेखक - क्षुल्लक गणेशप्रसादजी वर्णी से साभार।
संकलन - श्रीमती स्वस्ति जैन

मुनिराज भगवन्तों की पिछी मोर के पंखों की क्यों होती है

आपको पता ही होगा कि दिगम्बर मुनिराजों के पास दो ही वस्तुयें होतीं हैं। एक पिछी और दूसरा कमण्डलु।

पिछी संयम का प्रतीक है अर्थात् जीवों की रक्षा के लिये वे मोर के कोमल पंखों वाली पिछी धारण करते हैं।

कमण्डलु शुद्धि का प्रतीक है अर्थात् शौच आदि कार्यों के लिये जल की आवश्यकता होती है। अतः उनके कमण्डलु में प्रासुक जल होता है ।

पिछी के संदर्भ में विशेष बात -

1. पिछी के पंख में मोर के उन पंखों को प्रयोग किया जाता है/ किया जाना चाहिये जो मोर समयानुसार स्वयं छोड़ देता है। इसके लिये मोर की हिंसा नहीं की जाती।
2. मोर के पंख अत्यंत कोमल होते हैं जिससे सूक्ष्म जीवों की भी हिंसा नहीं होती।
3. पिछी में पाँच गुण होते हैं -

रज अग्रहण - पिछी धूल के कणों को भी ग्रहण नहीं करती।

स्वेद अग्रहण - पिछी से पसीना को भी ग्रहण नहीं करती।

कोमल - पिछी के पंख अत्यंत कोमल होते हैं।

सुन्दरता - पिछी देखने में मनोहारी होती है।

लाघवता - पिछी अत्यंत हल्की होती है।

ज्यादा बोझ लेकर चलने वाला अक्सर ढूब 'सामान ' का हो या 'अभिमान' का हो।

24 तीर्थंकर और उनके वैराग्य का कारण

प्रत्येक तीर्थंकर का मुनि बनना तो निश्चित रहता है। वे समय आने पर कोई न कोई निमित्त पाकर मुनि दीक्षा ले लेते हैं और वन जाकर आत्मसाधना करते हुये मोक्ष पद प्राप्त करते हैं। आईये जानते हैं 24 तीर्थंकरों के वैराग्य का कारण -

1.	तीर्थंकर आदिनाथजी	-	स्वर्ग की देवी नीलांजना की मृत्यु
2.	तीर्थंकर अजितनाथजी	-	उलकापात देखना
3.	तीर्थंकर संभवनाथजी	-	मेघपटल का देखना
4.	तीर्थंकर अभिनन्दननाथजी	-	गान्धर्व नगर का नाश
5.	तीर्थंकर सुमतिनाथजी	-	पूर्व भव का स्मरण
6.	तीर्थंकर पद्मनाथजी	-	पूर्व भव का स्मरण
7.	तीर्थंकर सुपार्श्वनाथजी	-	वन लक्ष्मी का नाश
8.	तीर्थंकर चन्द्रप्रभजी	-	बिजली देखना
9.	तीर्थंकर पुष्पदंतजी	-	उलकापात देखना
10.	तीर्थंकर शीतलनाथजी	-	हिम का नाश देखना
11.	तीर्थंकर श्रेयांसनाथजी	-	वन लक्ष्मी का नाश देखना
12.	तीर्थंकर वासुपूज्यजी	-	पूर्व भव का स्मरण
13.	तीर्थंकर विमलनाथजी	-	मेघपटल का नाश देखना
14.	तीर्थंकर अनन्तनाथजी	-	उलकापात देखना
15.	तीर्थंकर धर्मनाथजी	-	उलकापात देखना
16.	तीर्थंकर शान्तिनाथजी	-	पूर्व भव का स्मरण
17.	तीर्थंकर कुन्थुनाथजी	-	पूर्व भव का स्मरण
18.	तीर्थंकर अरनाथजी	-	मेघपटल का नाश देखना
19.	तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथजी	-	बिजली देखना
20.	तीर्थंकर मल्लिनाथजी	-	पूर्व भव का स्मरण
21.	तीर्थंकर नमिनाथजी	-	पूर्व भव का स्मरण
22.	तीर्थंकर नेमिनाथजी	-	बंधे हुये पशुओं को देखकर
23.	तीर्थंकर पार्श्वनाथजी	-	जाति स्मरण
24.	तीर्थंकर महावीर स्वामी	-	जाति स्मरण

मांस की कीमत

मगध सम्राट श्रेणिक ने एक बार अपनी राजसभा में पूछा- देश की खाद्य समस्या को सुलझाने के लिये सबसे सस्ता उपाय क्या है ?

राजसभा के सभी मंत्री तथा अन्य सदस्य विचार करने लगे कि गेहूँ, चावल, दाल तो बहुत मेहनत से प्राप्त होते हैं और यदि कहीं बारिश न हो तो ये फसलें भी नहीं होतीं। ऐसी परिस्थिति में अनाज तो सस्ता हो ही नहीं सकता। राजसभा के एक मंत्री को शिकार खेलने का बहुत शौक था उसने सोचा कि मांस ही ऐसी चीज है जो हमारे देश में आसानी से और सदा उपलब्ध रहता है। उसने मुस्कराते हुये कहा कि महाराज! सबसे सस्ता पदार्थ तो मांस है। इसे पाने में पैसा भी नहीं लगता और पौष्टिक वस्तु खाने को मिल जाती है।

सबने इस विचार का समर्थन किया परन्तु मगध के प्रधानमंत्री अभयकुमार चुप रहे।

श्रेणिक ने अभयकुमार से पूछा - प्रधानमंत्री अभयकुमारजी! आप चुप क्यों हैं ? क्या आपको यह सुझाव अच्छा नहीं लगा? इस बारे में आपका क्या विचार है?

प्रधानमंत्री बोले - राजन्! मांस को सबसे सस्ता कहना बिल्कुल गलत है। इस सम्बन्ध में अपना विचार मैं कल व्यक्त करूँगा।

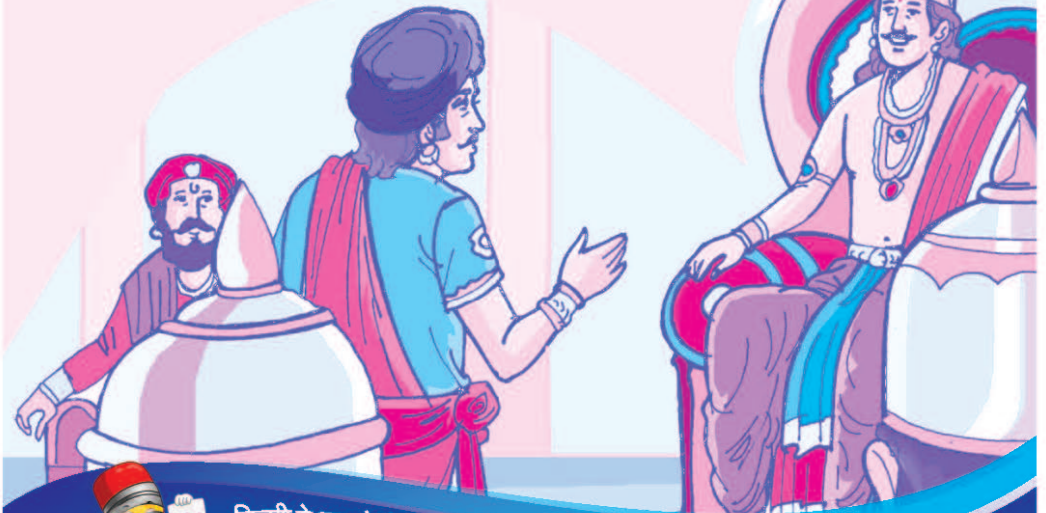

जिन्दगी से आप जो भी बेहतर ले सकते हो ले लो क्योंकि जब जिन्दगी लेना शुरू करेगी तो सांस भी नहीं छोड़ेगी

रात होने पर प्रधानमंत्री सीधे उस मंत्री के घर पहुँचे, जिसने मांस को सस्ता बताया था। दरवाजा खटखटाने पर वह मंत्री बाहर आया तो वह आधी रात को प्रधानमंत्री को अपने घर आया देखकर घबरा गया और स्वागत करते हुये प्रधानमंत्री से पूछा कि प्रधानमंत्रीजी! आपका इतनी रात को अचानक मेरे घर पर किस काम से आना हुआ?

प्रधानमंत्री ने कहा - रात्रि में अचानक महाराज का स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया है। राजवैद्य ने कहा है कि यदि किसी व्यक्ति के हृदय को 50 ग्राम मांस मिल जाये तो राजा के प्राण बच सकते हैं। आप तो राजा के प्रिय पात्र हैं इसलिये मैं सबसे पहले आपके पास आया हूँ। इसके लिये आपको जितने भी रुपये-सोना चाहिये, तो मैं दे सकता हूँ। यह सुनते ही उस सदस्य का चेहरा पीला पड़ गया। उसने सोचा- जब जीवन ही नहीं रहेगा तो धन-वैभव किस काम का? वह प्रधानमंत्री के पैर पकड़कर बोला - आप मुझसे जितनी चाहे राशि ले लें परन्तु आप किसी और मंत्री का मांस खरीद लीजिये।

एक लाख सोने की मुद्रायें लेकर अभयकुमार बारी-बारी से सभी मंत्री के पास गये और सबसे राजा की बीमारी बताकर उनसे उनके हृदय का 50 ग्राम मांस मांगा। परन्तु कोई अपना मांस देने तैयार नहीं हुआ । पर सबने प्रधानमंत्री को अपनी परिस्थिति के अनुसार बहुत राशि, सोना-चांदी दिया और किसी दूसरे मंत्री का मांस खरीदने को कहा। सभी की राशि और सोना आदि लेकर अगले दिन अभयकुमार राजसभा में पहुँच गये और राजा के सामने सारी राशि और सोना रख दिया।

राजा ने आश्चर्य से पूछा - अभयकुमारजी! यह सब किसलिये?

रात की पूरी घटना सुनाते कहा - 50 ग्राम खरीदने के लिये इतनी राशि एकत्रित हो गई परन्तु 50 ग्राम मांस नहीं मिला। अब आप ही बताइये कि मांस सस्ता है या मंहगा?

जीवन का मूल्य अनन्त है। संसार के प्रत्येक जीव को अपने प्राण प्यारे हैं। यह सुनकर राजा ने प्रधानमंत्री को उनकी बुद्धिमानी के लिये धन्यवाद दिया।

स्वानुभूति ही श्रेष्ठ है, तीन लोक का कार्य।
जन्म दिवस पर यही भावना, जानो निज परमार्थ।।

स्वानुभूति स्वप्निल शाह, पुणे 23 मई 2015

पद्मावती की पूजन का प्रारंभ कैसे ?

अंतिम सम्राट ब्रह्मरथ को उनके सेनापति पुष्पमित्र ने धोखे से मार डाला और स्वयं राजा बन गया। उसने जैनियों को पकड़कर जनेऊ एक धागा जिसे ब्राह्मण अपने गले में पहनते हैं। पहनाकर दुर्गा देवी की पूजन करवाई। जिसने ऐसा नहीं किया उसे मरवा दिया तब जैनियों ने अपने प्राण बचाने के लिये दुर्गा देवी को पद्मावती के नाम से अपने मंदिरों में स्थापित किया और पूजन करना प्रारंभ कर दिया तभी से जिनमंदिरों में पद्मावती का पूजन प्रारम्भ कर दिया।

प्राचीन जैन आचार्यों के अनुसार किसी भी रागी-द्वेषी देवी-देवता की पूजन करना करना गृहीत मिथ्यात्व है और जैन आगम में किसी स्त्री का पूजन का निषेध है। तीन लोकों में मात्र वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु ही पूजन करने के योग्य हैं।

- सन्मति संदेश 1997 से साभार।

महाभारत युद्ध के दुष्परिणाम

कौरवों की 11 अक्षोहिणी सेना थी और पाण्डवों की 7 अक्षोहिणी सेना थी। एक अक्षोहिणी सेना में 21,780 रथ, 21,870 हाथी, 6510 घोड़े और 1,09,350 पैदल सैनिक होते हैं।

दोनों पक्षों में 18 दिन युद्ध हुआ, जिसमें कौरव सेना के सेनापति 10 दिन तक भीष्म पितामह, 5 दिन तक द्रोणाचार्य, डेढ़ दिन तक शल्य और आधे दिन तक दुर्योधन बने।

इस युद्ध में 66 करोड़ 6 लाख 20 हजार सैनिक मारे गये। 24,165 योद्धा भाग गये। कौरवों और पाण्डवों के मित्र राजा भी अपनी सेना लेकर सहयोग करने आये थे। इन राजाओं के मरने वाले सैनिकों की संख्या अलग है जो युद्ध में मारे गये।

ना किसी के अभाव में जियो, ना किसी के प्रभाव में जियो, यह जिन्दगी है आपकी, अपने स्वभाव में जियो।

अब नहीं उड़ाऊँगा

कहान गुरु के बचपन का नाम कानू था। एक बार वह अपने भाई खुशालचंद के साथ पतंग उड़ाने गये। खुशालभाई पतंग और धागा खरीदकर एक सरोवर के पास पहुँच गये। खुशालभाई पतंग उड़ाने लगे और कानू ने धागा की चकरी पकड़ ली। पतंग उड़ाने में दोनों को मजा आने लगा। कानू ने भी पतंग उड़ाई और अपनी पतंग से करमशीभाई की पतंग को काटकर नीचे गिरा दिया। खुशालभाई अत्यंत प्रसन्न हो गये। अपनी पतंग को दूर जाता देखकर करमशी भाई रोने लगा। कानू उसे रोता देखकर दुःखी हो गया और अपने भाई से बोला भाई ! यह पतंग और धागा करमशी भाई को दे दो। खुशालभाई बोले - रहने दे। ऐसा तो होता ही है, रोने दे उसे। कानू बोला - भाई ! हम पतंग उड़ाने आते हैं तो किसी को रुलाने नहीं। खुशालभाई बोले - पतंग उड़ेगी तो कटेगी भी, इसमें रोने की क्या बात है ? कानू बोला-भाई ! यदि हमारी पतंग कटती तो आपको कैसा लगता ? बुरा लगता- खुशाल भाई बोले।

कानू ने पूरे विश्वास के साथ कहा - हमारे कारण किसी को दुःख पहुँचे, हमें ऐसा काम नहीं करना चाहिये। कानू ने पतंग और धागा करमशीभाई को देते हुये कहा - यह लो मेरी पतंग और धागा और आज मैं संकल्प करता हूँ कि आज के बाद मैं कभी पतंग नहीं उड़ाऊँगा।

कृष्णा का देश प्रेम

मेवाड़ के महाराजा भीमसिंह की पुत्री कृष्णा अत्यन्त सुन्दर थी। जयपुर और जोधपुर के राजा सहित अनेक राजपूत राजा उससे विवाह करने के इच्छुक थे। मेवाड़ के महाराणा ने सब बातों का विचार कर जोधपुर के राजा के साथ सगाई करने का पत्र भेज दिया।

जब जयपुर के नरेश को इस बात का पता लगा कि मेवाड़ के महाराणा ने मेरी प्रार्थना अस्वीकार कर दी है तो उन्होंने अपना अपमान समझा। वे चित्तौड़ से युद्ध करने की तैयारी करने लगे।

जोधपुर नरेश को यह बात पता लगी कि उनका विवाह कृष्णा से निश्चित होने के कारण जयपुर नरेश चित्तौड़ पर आक्रमण करने वाले हैं तो उन्होंने जयपुर नरेश से युद्ध करने का निर्णय किया। दोनों राजाओं में भयंकर युद्ध होने लगा। जोधपुर की सेना हार गई और जयपुर नरेश विजयी हो गये। उन्होंने मेवाड़ नरेश के पास संदेश भेजा कि वे अपनी पुत्री कृष्णा के साथ उनका विवाह कर दें।

मेवाड़ के महाराज ने उत्तर दिया कि मेरी पुत्री कोई बाजार की वस्तु नहीं है कि जो जीते, उसे बेच दूँ। मैं उसके भले-बुरे का विचार करके निर्णय करूँगा। जयपुर नरेश ने मेवाड़ नरेश का समाचार सुनकर मेवाड़ पर आक्रमण करने का निर्णय करके सेना को लेकर मेवाड़ के पास पड़ाव डाल दिया और मेवाड़ नरेश को धमकी दी कि - "कृष्णा अब मेवाड़ में नहीं रह सकती। या उसे मेरी रानी बनकर जयपुर चलना होगा या मेरे सामने इस महल से उसकी लाश ही निकलेगी।"

गरीब आदमी मंदिर के बाहर भीख मांगता है और अमीर आदमी मंदिर के अंदर भीख मांगता है।

महाराजा भीमसिंह बड़ी चिन्ता में पड़ गये। मेवाड़ की छोटी सी सेना जयपुर नरेश की सेना से युद्ध नहीं कर सकती थी और इस प्रकार की धमकी पर अपनी पुत्री को दे देना पूरे मेवाड़ का पराजय से बड़ा अपमान था। अन्त में उन्होंने जयपुर नरेश की बात पकड़ ली - "इस महल से कृष्णा की लाश ही निकलेगी।"

मेवाड़ के सम्मान का एक ही रास्ता था - कृष्णा की मृत्यु। परन्तु उस सुन्दर राजकुमारी को मारेगा कौन ? यह विचार कर महाराणा की आंख में आंसू आ गये। जैसे ही कृष्णा ने पिता का निर्णय सुना तो ऐसे प्रसन्न हुई जैसे उसे कोई निधि मिल गई हो। वह अपनी माँ को रोते हुये देखकर बोली - " माँ तुम क्षत्राणी होकर रोती हो अपने देश के लिये मरने से बड़ा क्या सौभाग्य होगा और अपने पिता से बोली - " पिताजी ! आप तो राजपूत हैं, पुरुष हैं, फिर भी रोते हैं ... ।मेवाड़ की रक्षा के लिये ऐसे सौ जन्म भी अर्पित करने तैयार हूँ। इतना कहकर कृष्णा ने जहर खा लिया।

जब कृष्णा की लाश नगर के बाहर निकली तो देश पर बलिदान होने वाली कृष्णा की अर्थी देखकर जयपुर नरेश ने सिर झुका लिया और उसकी आंखों में आंसू आ गये। धन्य है ऐसा बलिदान .....

- वीर बालिकायें

नवयुगलों को धर्ममय जीवन हेतु शुभकामनायें

मलाड मुम्बई निवासी श्री फतेहलालजी टाया की सुपुत्री **सौ. सोनल** का शुभ विवाह मुम्बई अंधेरी निवासी श्री हीरालालजी बरछा के सुपुत्र **चि. अर्पित** के संग दिनांक 26 जनवरी 2015 का संपन्न हुआ।

दादर मुम्बई निवासी श्री भरतभाई की सुपुत्री **सौ. पूजा** का शुभ विवाह मुम्बई निवासी निवासी श्री शांतिलाल के सुपुत्र **चि.संकुल** के संग दिनांक 10 फरवरी 2015 का संपन्न हुआ।

जिसका पुण्य उदय नहीं हो तो उसे हम कुछ दे भी नहीं सकते।

कविता

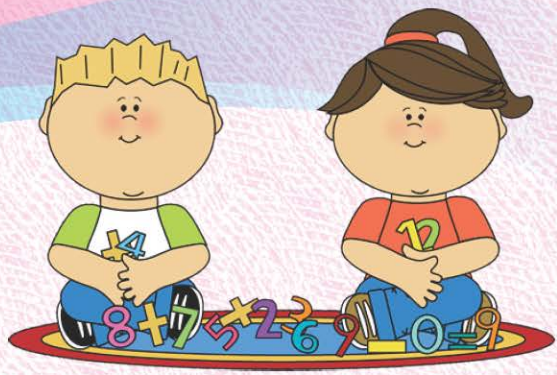

सबसे पहला नम्बर एक।
प्रभु चरणों में मस्तक टेक।।

दूसरे नम्बर पर है दो।
पाप भाव सब छोड़ दो।।

तीसरे नम्बर पर है तीन।
मुनिवर हैं आतम में लीन।।

गिनती का नम्बर है चार।
जैन धर्म से करना प्यार।।

पाँचवा नम्बर आया पाँच।
देव-शास्त्र-गुरु पर न आये आंच।।

छठे नम्बर पर है छह।
सबसे हिलमिलकर रह।।

सातवां नम्बर प्यारा सात।
जिनवाणी का पढ़ना पाठ ।।

आठवां नम्बर पर आया आठ ।
ध्यान से सुनना गुरु की बात।।

नौंवा नम्बर होता है नौ।
पूज्य पद बतलाये नौ ।।

दसवें नम्बर पर आया दस।
प्रभु वाणी में कितना रस।।

- विराग शास्त्री

धार्मिक पहेली के उत्तर 1. आचार्य 2.उपाध्याय 3.सिद्ध 4. अष्ट द्रव्य 5. जिनवाणी माँ 6. जिनवाणी माँ 7. मंदिर 8. अरहंत 9.भगवान 10.जल 11. वृषभनाथ

जो देव-शास्त्र-गुरु की उपेक्षा करते हैं, वे सर्वत्र उपेक्षित होते हैं।

कलिंग चक्रवर्ती सम्राट महामेघवाहन ऐल खारवेल

बच्चो ! आपने अपने स्कूल की इतिहास की पुस्तकों में सम्राट खारवेल का नाम सुना होगा या आगे आप सुनेंगे। आइये जाने इस सम्राट के बारे में -

खारवेल दूसरी शताब्दी का सर्वाधिक शक्तिशाली ,प्रतापी एवं दिग्विजयी राजा था। साथ ही वह जैन धर्म का परम भक्त था। राज्य काल में ही उन्होंने श्रावक के व्रत ग्रहण किये बाद में गृह और राजकाज छोड़कर दिगम्बर मुनि दीक्षा लेकर कुमारी पर्वत पर तप द्वारा आत्मसाधना की।

खारवेल के शासनकाल के 200-250 वर्ष पूर्व वहाँ की प्रसिद्ध आदिनाथ भगवान की जिनप्रतिमा नन्दराजा ले गया था। खारवेल मगध पर आक्रमण करके विजय प्राप्त करके उस प्रतिमा को वापस लाये।

उन्होंने दिगम्बर मुनिराजों के आवास हेतु गुफायें बनवाईं। अर्हन् मंन्दिर के पास उसने एक विशाल मण्डप अर्कासन गुफा बनवाया। इसके मध्य में एक बहुमूल्य रत्नजड़ित मानस्तम्भ स्थापित करवाया। यहीं पर महामुनि सम्मेलन आयोजित किया और द्वादशांग का श्रुतपाठ करवाया।

सम्राट खारवेल का शिलालेख उड़ीसा में पुरी जिले के अन्तर्गत खण्डगिरि पर्वत के उदयगिरि पर मिलता है। यहाँ पर बने हुये हाथी गुफा, विशाल प्राचीन गुफा मन्दिर के मुख और छत पर सत्रह पक्तिंयों में 84 फुट के विस्तार में शिलालेख उत्कीर्ण हैं। लेख के प्रारंभ में अरिहंतों एवं सर्व सिद्धों को नमस्कार किया गया है।

खारवेल ने अपने समय पर कलिंग देश उड़ीसा को भारत की सर्वोच्च शक्ति बना दिया था और लोक हित एवं जैन धर्म के प्रभावना के अनेक कार्य किये।

साभार - जैनत्व गौरवगाथा

सूर्यमित्र बना भगवान

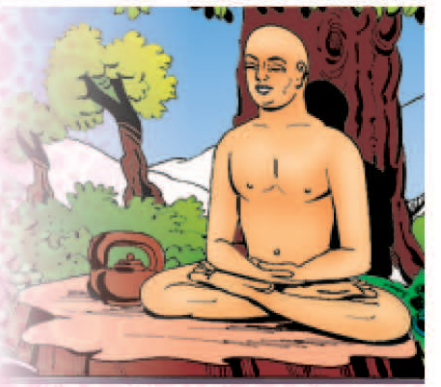

राजगृही नगरी के राजा सुबलराज ने स्नान के बाद तेल लगाते समय अपनी बहु मूल्यवान अंगूठी कुछ समय के लिये अपने राजपुरोहित सूर्यमित्र को दे दी। सूर्यमित्र वह अंगूठी पहनकर अपने घर चला गया। शाम को सरोवर में स्नान करने के बाद उसे अपनी अंगुली में अंगूठी नहीं मिली तो वह समझा कि अंगूठी कहीं खो गई है। उसे राजा के दण्ड का भय लगने लगा। उसने एक निमित्तज्ञानी मुनिराज से पूछा तो उन्होंने कहा - तुम्हारी अंगूठी शीघ्र ही मिल जायेगी। परन्तु उसे तो वह अंगूठी राजा को वापिस करना थी इसलिये उसकी चिन्ता लगातार बढ़ती जा रही थी। सज्जन पुरुष दूसरों की वस्तु को छूना भी पाप समझते हैं। तभी उसे ज्ञात हुआ कि अत्यंत ज्ञानवान जैन मुनि आचार्य सुधर्म नगर में आये हैं, वह उनसे अंगूठी के बारे में पूछने के लिये उनके पास पहुँच गया। मुनिराज की सौम्य मुद्रा देखकर उसे अंगूठी के विषय में पूछने का साहस नहीं हुआ, वह परेशान होकर मुनिराज के आस-पास चक्कर लगाने लगा। अवधिज्ञानी मुनिराज आचार्य सुधर्म ने कहा - हे सूर्यमित्र ! तुम राजा की अंगूठी गुम हो जाने से चिन्तित हो ना ?

सूर्यमित्र पुरोहित ने मुनिराज के विशेष ज्ञान से अत्यंत प्रभावित होकर पूछा कि हे मुनिवर! वह अंगूठी कहाँ पर है? मुनिराज बोले - वह अंगूठी स्नान करते समय तेरे ही घर के सरोवर में गिर गई थी और अभी भी वहीं पर है।

सूर्यमित्र ने मुनिराज के वचनों पर विश्वास करके अपने सरोवर अंगूठी की खोज की तो उसे अंगूठी मिल गई। उसने तुरन्त वह अंगूठी राजा को लौटाकर अपूर्व शान्ति का अनुभव किया। बाद में वह विचार करने लगा कि मुनिराज के पास निमित्तज्ञान की अपूर्व कला है, उनसे यह कला प्राप्त करना चाहिये। इस कला से मेरा मान और धन भी बढ़ेगा और उच्च पद भी प्राप्त होगा। इस प्रकार लोभ के कारण वह मुनिराज के पास विद्या सीखने गया। सच है कि लोभ के वश में जीव हर कार्य करने तैयार रहता है।

मुनिराज के पास पहुँचकर उन्हें नमस्कार कर प्रार्थना करते हुये बोला - हे गुरुवर! मुझ पर दया करके सब पदार्थों को जानने वाली विद्या मुझे प्रदान करें।

जो प्रशंसा के लिये कार्य करते हैं उनका उद्धार कभी नहीं होता, सत्य के लिये कार्य करना सीखो।

ज्ञानी मुनिराज बोले - हे भव्य! यह विद्या नग्न दिगम्बर मुनिराज के अतिरिक्त किसी को प्राप्त नहीं होती। यदि तुम्हें यह विद्या सीखना हो तो मेरे समान नग्न दिगम्बर दीक्षा लेना होगी।

मुनिराज की बात सुनकर विद्वान ब्राह्मण सूर्यमित्र अपने घर आया और परिवार के समस्त सदस्यों को बुलाकर अपना विचार प्रगट किया और कहा कि आचार्य सुधर्म मुनिराज के पास अपूर्व ज्ञान की अद्भुत विद्या है और यह विद्या दिगम्बर वेष धारण करने वाले को ही देते हैं। हे बन्धु! मैं उस विद्या को प्राप्त करने के लिये दिगम्बर मुद्रा धारण करूँगा और विद्या प्राप्त करने के बाद पुनः आप सबके पास वापस आ जाऊँगा। इसलिये आप चिन्ता न करें। उसकी बात सुनकर परिवार के सदस्यों ने विद्या सीखने के लिये अनुमति दे दी। इस प्रकार उस ब्राह्मण सूर्यमित्र ने आचार्य सुधर्म के पास जाकर नग्न दिगम्बर दीक्षा प्राप्त कर ली और दीक्षा लेने के बाद आचार्य से निवेदन किया कि हे गुरुवर! आप मुझे अलौकिक विद्या प्रदान करें।

तब मुनिराज ने कहा - हे विद्वान! मात्र नग्न होने से वह विद्या सिद्ध नहीं होती। उस विद्या के लिये सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की प्राप्ति आवश्यक है और सम्यग्दर्शन प्राप्त करने के लिये इस अरहंत कथित विश्व की व्यवस्था का स्वरूप समझना होगा।

सूर्यमित्र बोले - तो ठीक है गुरुवर! आप मुझे इस विश्व की व्यवस्था का स्वरूप समझाने की कृपा करें।

तब आचार्यश्री ने सूर्यमित्र को चारों अनुयोगों का क्रमशः ज्ञान कराना प्रारम्भ कर दिया। महापुरुषों के कथाओं के साथ ही मिथ्यात्व आदि पापों, जगत की स्वतन्त्र व्यवस्था, षट्कारक आदि का ज्ञान कराया। सूर्यमित्र को लगा कि जिनेन्द्र भगवान द्वारा प्रतिपादित जैन धर्म सत्य और महान है। उसे अपने पूर्व में किये हुये कार्यों पर पश्चाताप होने लगा। मैंने अब तक अपना समय मिथ्या धर्म, कुदेवों और कुगुरुओं की संगति में बिताया और अनेक पाप कमाये और आचार्य सुधर्म मुनिवर ने मुझे कल्याणकारी जिन दीक्षा प्रदान की। मुझे पवित्र मोक्षमार्ग मिल गया। विशेष बुद्धि का स्वामी सूर्यमित्र आतमा का स्वरूप समझकर सम्यग्दृष्टि हो गया।

एक बार सूर्यमित्र मुनिराज अपने गुरु के साथ विहार करते हुये चम्पापुर आये। चम्पापुर तीर्थंकर वासुपूज्य की निर्वाण भूमि है। मुनिसंघ ने सिद्धक्षेत्र को नमस्कार किया और आचार्य सुधर्म ने सूर्यमित्र के ज्ञान-तप-आराधना देखकर उन्हें आचार्य पद प्रदान किया। कुछ समय आचार्य पद संभालने के बाद आचार्य पद त्यागकर वे घोर तप करने लगे और कुछ समय के बाद सूर्यमित्र मुनिराज ने निर्वाण पद की प्राप्ति की। इस तरह लोभ से मुनि बनने वाले ब्राह्मण सूर्यमित्र ने जिनधर्म के प्रभाव से अनंत सुख की प्राप्ति की।

धार्मिक पहेली

पहले अपनी बुद्धि लगाईये,
न बने तो इसी अंक में उत्तर पाईये।

दो देते पाले तीन और छह।
जिनको पालते और पीते आत्म रस।।

पढ़ते पढ़ाते जिससे वे पाठक कहलाते।
पच्चीस को धारण करते वे क्या कहलाते ?

वे देखे जाने सबको।
वे दिखते नहीं तुम बताओ उनको।।

तीन सफेद तीन पीले एक काला।
एक फल के साथ, नाम बताओ लाला।।

नहीं कहती नहीं बुलाती, फिर भी लोग कहें कहती।
हाथ पैर नहीं मुँह नहीं लोग कहें वह बताती।

मेरा नाम और चिन्ह एक समान।
तीर्थंकरों में ढूंढो मेरा नाम।।

तीन अक्षर का मेरा नाम, मध्य कटे तो मर जाता।
जो मेरे घर प्रतिदिन आता, वह सच्चा सुख पाता।।

न खाते न पीते, फिर भी चलते रहते।
उनको सुनकर जीव, सब प्रसन्न रहते।।

न मारते न डांटते न कुछ कहते।
फिर भी उनके सामने हाथ जोड़ते।।

पीते भी हैं और चढ़ाते भी। बोलो क्या ?

न जन्म दिया न दूध पिलाया।
फिर भी माँ का संबोधन पाया।।

फुरसत नहीं घर से मंदिर तक इंसान को आने की और इच्छा शमशान से सीधा स्वर्ग जाने की रखते हैं।

सौन्दर्य अभिमान

एक नर्तकी थी, अनुपम सौन्दर्य की मलिका। जो भी उसे देखता तो बस देखता ही रह जाता था। उसे अपने रूप पर बहुत घमण्ड था। वह सदा दर्पण में अपना रूप देखकर खुश होती रहती थी। वह खिड़की के पास बैठकर बाहर के दृश्य देख रही थी। उसने देखा कि उसके भवन के नीचे से एक सन्यासी जा रहा है। उस सन्यासी का युवा रूप और बलवान शरीर देखकर नर्तकी अचंभित रह गई। उसने तुरन्त अपनी दासी से कहा - जाओ! उस सन्यासी को बुलाकर लाओ, कहना - मालकिन अपने हाथों से भिक्षा देना चाहती हैं। दासी दौड़कर गई और सन्यासी को बुलाकर ले आयी। सन्यासी आकर नर्तकी के सामने खड़ा हो गया। नर्तकी काम से पीड़ित होकर सन्यासी को अपने हाव-भाव से आकर्षित करने का प्रयास करने लगी।

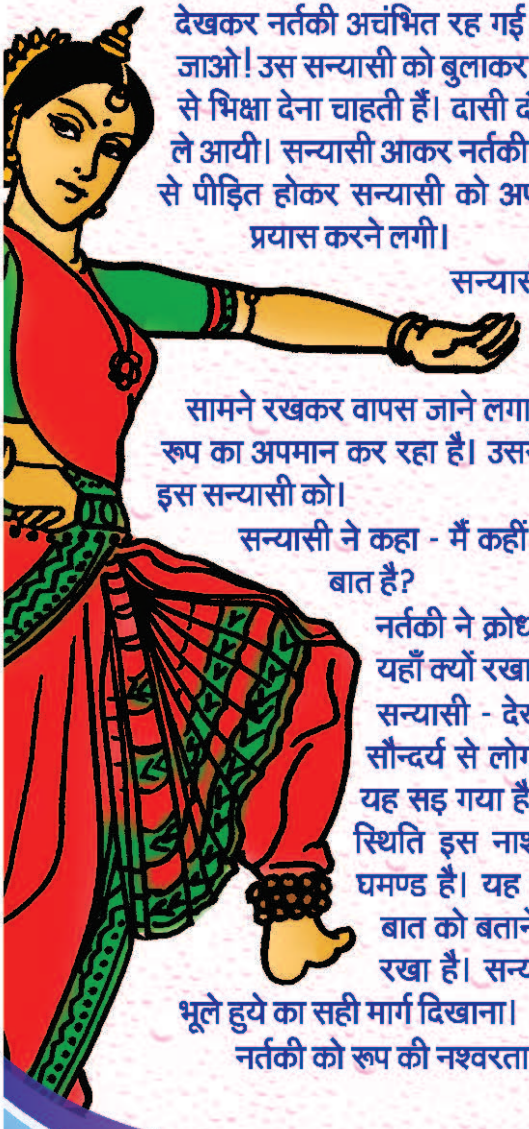

सन्यासी अपनी आंखें नीचे करके खड़ा रहा। उसने अपने भिक्षा पात्र से एक सड़ा हुआ सेव निकाला और नर्तकी के सामने रखकर वापस जाने लगा। नर्तकी को लगा कि सन्यासी उसके रूप का अपमान कर रहा है। उसने अपने पहरेदार से कहा - पकड़ लो इस सन्यासी को।

सन्यासी ने कहा - मैं कहीं भागकर नहीं जाने वाला, बोलो क्या बात है?

नर्तकी ने क्रोध से पूछा - आपने यह सड़ा-गला सेव यहाँ क्यों रखा ?

सन्यासी - देखो देवी! एक दिन यह सेव भी अपने सौन्दर्य से लोगों को आकर्षित करता था, पर आज यह सड़ गया है। इसमें दुर्गन्ध आ रही है। यही यही स्थिति इस नाशवान शरीर की है, जिस पर तुम्हें घमण्ड है। यह रूप एक दिन नष्ट हो जायेगा, इसी बात को बताने के लिये मैंने यह सेव तुम्हारे सामने रखा है। सन्यासी हूँ इसलिये मेरा काम ही है कि भूले हुये का सही मार्ग दिखाना।

नर्तकी को रूप की नश्वरता समझ में आ गई और वह सन्यासी के

ऐसे नहीं बोलूँगी....

टॉफी नहीं खाना बेटा! दादाजी गुस्सा करेंगे- समिति अपने बेटे का समझाते हुये बोली।

क्या दादाजी बहुत गुस्सा करते हैं मम्मी! - संयम ने सहज भाव से पूछा।

हाँ ! बहुत गुस्सा करते हैं। तुम टॉफी नहीं खाओगे ना।

नहीं खाऊँगा - संयम ने भोलेपन से कहा।

समिति कई बार अपनी बात बनवाने के लिये संयम को दादाजी के गुस्से का डर दिखाती थी, कभी कहती मंदिर नहीं जाओगे तो भगवान नाराज हो जायेंगे और रोज मंदिर जाओगे तो भगवान प्राइज देंगे। कभी कहती भोजन झूठा छोड़ोगे तो पापा बहुत मारेंगे। रोज-रोज ऐसी बातें सुनकर संयम सबसे डरकर रहने लगा। उसके मन में भगवान की, दादा की खराब छवि बन गई। वह दादाजी से कम बात करता था। वह मंदिर जाता तो सोचता - ये क्या बात हुई यदि इनके दर्शन नहीं करेंगे तो नाराज और दर्शन रोज करेंगे तो प्राइज। ये तो अच्छी बात नहीं है। उसने एक दिन अपने दादाजी से पूछा - दादाजी! आप बहुत गुस्से वाले हो ना...। दादाजी ने प्यार से कहा - नहीं बेटा! मैं तुम पर गुस्सा क्यों करूँगा। गुस्सा करना तो पाप है।

पर मम्मी ऐसा क्यों कहती हैं ? मंदिर नहीं जाओगे भगवान गुस्सा हो जायेंगे तो क्या भगवान पाप करते हैं ?- संयम ने पूछा।

संयम की बात सुनकर दादाजी आश्चर्य में पड़ गये वे अनुभवी थे। वे समझ गये कि उनकी बहू समिति कोई काम करवाने के लिये सबका डर दिखाती है। उन्होंने संयम को उसके कमरे में भेज दिया और बहू को बुलाया और प्यार से कहा - देखो बहू! मैं समझता हूँ कि हर माँ अपने बच्चे को अच्छे संस्कार देना चाहती है और माँ तो ऐसी ही होना चाहिये लेकिन किसी का डर दिखाकर हम बच्चों से काम

मन में भय से काम करने की आदत हो जायेगी। तुम ही बताओ क्या मैं बच्चों पर नाराज होता हूँ...क्या अपने वीतरागी भगवान कभी क्रोध करते हैं या किसी को कुछ उपहार देते हैं....। भगवान को रागी - द्वेषी मानना तो उनका अविनय करना है। ऐसे में तो संयम के मन में जिनेन्द्र भगवान की गलत स्वरूप स्थापित हो जायेगा।

समिति चुपचाप उनकी बात सुन रही थी। वह हिम्मत करके बोली - वो तो मैं ऐसे ही कह देती थी। मेरे पास और कोई उपाय भी नहीं है।

नहीं बहू। हम बच्चों को नकारात्मक सोच से नहीं सकारात्मक सोच से बदलें। तुम उसे भोजन झूठा छोड़ने से होने वाले नुकसान के बारे में बताओ, जिनेन्द्र दर्शन का लाभ बताओ, टॉफी खाने से दांत खराब होने का नुकसान बताओ और टॉफी अभक्ष्य होती है ऐसा समझाओ।

वाह पापाजी ! आपने मेरी समस्या आसान कर दी।

अब मैं संयम को गुस्से का डर नहीं बल्कि हानि-लाभ के बारे में बताऊँगी।

समिति ने प्रसन्न मन से कहा ।

- बाबा रवीन्द्रजी "आत्मन" के प्रवचन बिन्दु पर आधारित

- विराग शास्त्री

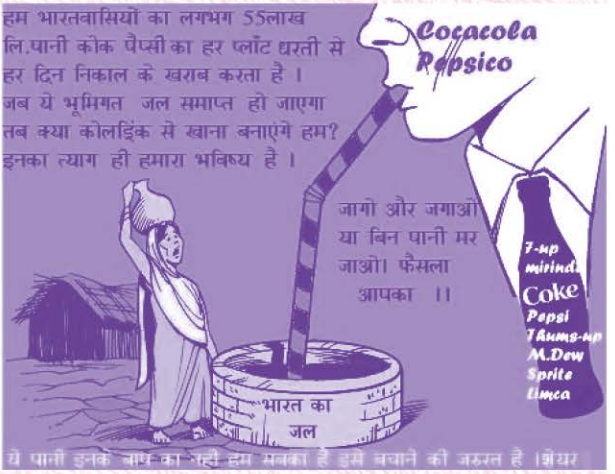

पेप्सी बोली सुन कोका कोला
भारत का इन्सान है बहुत भोला ।
विदेश से मैं आई हूँ मैं,
साथ में मौत को लाई हूँ मैं ।
लहर नहीं जहर हूँ मैं,
गुर्दों पर गिरता कहर हूँ मैं।
मेरी पी.एच. दो प्वाइंट सात,
मुझमें गिरकर गल जायें दांत।
जिंक आर्सेनिक लेड हूँ मैं,
काटे आंतों को, वो ब्लेड हूँ मैं।
हाँ दूध मुझसे सस्ता है,
फिर पीकर मुझको क्यों मरना है...
अरबों रुपये कमाती हूँ,
विदेश में ले जाती हूँ।
छोड़ो नकल अब अकल से जियो।
और जो कुछ पीना है संभल कर पियो।
दिखावे मत जाओ, अपनी अकल लगाओ।
सबको यह कविता सुनाओ,
स्वदेशी अपनाओ, देश बचाओ।।

सुख कहाँ

नरक में आतम रोता।
स्वर्ग में आतम रोता।
चारों गति में रोता।

मुक्ति में आतम सदा सुखी।
कर्म में आतम मिले नहीं।
देह में आतम मिले नहीं।

राग में आतम मिले नहीं।
ज्ञान में आतम मिले सदा।
कर्म से आतम छूटता।
देह से आतम छूटता।
आतम का सुख भोगता।।

सुख कैसे

हिंसा छोड़ो झूठ छोड़ो, चोरी कुशील परिग्रह छोड़ो ।
जग विषयों से मुख को मोड़ो, मुक्तिमार्ग से खुद को जोड़ो ।।
छोड़ो छोड़ो पाँचों पाप, देते हैं जो महासंताप ।
तब ही होगा कल्याण, कहते हैं श्री वीर महान ।।

- ब्र.सुमतप्रकाश जी जैन

समाचार कोना

वाशिम में रत्नत्रय मण्डल विधान एवं छहढ़ाला शिविर सानंद संपन्न

यहाँ जवाहर कॉलोनी स्थित श्री आदिनाथ जिनालय में दिनांक 26 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 2014 तक श्री रत्नत्रय मण्डल विधान एवं छहढ़ाला शिविर सानंद सम्पन्न हुआ।पाटनी परिवार द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर के प्रतिदिन तीन समय व्याख्यानों का लाभ प्राप्त हुआ, साथ ही श्री विराग शास्त्री जबलपुर द्वारा पूजन के विशेष अर्थ एवं व्याख्यानों का लाभ प्राप्त हुआ। प्रतिदिन स्थानीय बाल एवं किशोर वर्ग के बालक-बालिकाओं द्वारा रोचक एवं आध्यात्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। विधान की सम्पूर्ण विधि ब्र.डॉ. मनोजजी जैन जबलपुर द्वारा संपन्न कराई गई। इस कार्यक्रम में औरंगाबाद, हिंगोली, मुम्बई, अकोला आदि अनेक नगरों के साधर्मियों ने सहभागिता कर लाभ प्राप्त किया।

- संतोष पाटनी

पोन्नूर में अष्टान्हिका महोत्सव एवं शिविर संपन्न

आचार्य कुन्दकुन्द देव की तपोभूमि पोन्नूर मलै में श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा शाश्वत पर्व अष्टान्हिका महोत्सव विशेष रूप से आयोजित किया गया। यहाँ आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति सेन्टर में दिनांक 26 फरवरी से 5 मार्च तक श्री पंचमेरु-नन्दीश्वरद्वीप मण्डल विधान का आयोजन किया गया। साथ ही दैनिक कार्यक्रमों प्रतिदिन पूज्य गुरुदेवश्री के सीडी प्रवचन के पश्चात् प्रवचन में समागत मुख्य बिन्दुओं की गंभीर चर्चा की गई। इस कार्यक्रम में विशेष रूप से पधारे विद्वान पण्डित श्री अभयकुमार शास्त्री जैन दर्शनाचार्य द्वारा कारणशुद्धपर्याय विषय पर कक्षा एवं पण्डित श्री चेतनभाई मेहता राजकोट द्वारा समयसार ग्रन्थ की 14-15 वीं गाथा पर सारगर्भित चर्चा की गई।कार्यक्रम का संचालन श्री अनंतराय ए.सेठ के मार्गदर्शन में एवं श्री विराग शास्त्री, जबलपुर के संयोजन में सफलतापूर्वक किया गया गया।

इस कार्यक्रम में मुम्बई, राजकोट, हिंगोली, परभड़ी, विजयवाड़ा, कोलकाता, चेन्नई, छिन्दवाड़ा, जयपुर, इंदौर, ग्वालियर, बेलगाम आदि स्थानों के अनेक साधर्मियों ने लाभ लिया।

- राजीव जैन

संभागीय शास्त्री सम्मेलन का आयोजन जून में

भूतपूर्व शास्त्री स्नातकों के स्नेह मिलन एवं तत्वप्रचार-प्रसार में उनके सहयोग एवं भूमिका सुनिश्चित करने हेतु मध्यप्रदेश के कुछ नगरों में स्थायी रूप से निवास करने वाले शास्त्री स्नातकों का एक सम्मेलन द्रोणगिरि में आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम के संयोजक श्री अरविन्द शास्त्री एवं श्री आशीष शास्त्री टीकमगढ़ हैं। यह तीन दिवसीय आयोजन श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा किया जायेगा। इस कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी समय पर पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से दी जायेगी।

जबलपुर निवासी श्री विजय-श्रीमति हंसा पामेचा के सुपुत्र **चि.अरिहन्त पामेचा** का विवाह भोपाल निवासी **सौ.यशी** के संग दिनांक १६ फरवरी को संपन्न हुआ। इस अवसर पर परिवार की ओर से श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर में श्री भक्तामर मण्डल विधान का मंगल आयोजन किया गया।

एक बुजुर्ग व्यक्ति अपना मोबाइल फोन लेकर एक मोबाइल दुकान पर जाता है और दुकानदार से कहता है कि भाई! लगता है मेरा मोबाइल काम नहीं कर रहा। दुकानदान उस मोबाइल को अच्छी तरह से चेक करके कहता है कि दादाजी! आपका यह मोबाइल तो बिल्कुल ठीक है, इसमें कोई खराबी नहीं है। उस बुजुर्ग व्यक्ति की आँख में आंसू आ गये, उसने रोते हुये दुकानदार से पूछा - जब मोबाइल बिल्कुल ठीक है तो इसमें मेरे बच्चों के फोन क्यों नहीं आते ?

धैर्य और संतोष हो तो निर्धनता बुरी नहीं लगती।
कपड़े साधारण हों पर धुले और साफ हों तो बुरा नहीं लगता।
भोजन सादा हो पर ताजा और भक्ष्य हो तो बुरा नहीं लगता।
मनुष्य कुरूप हो पर अच्छे स्वभाव का हो तो बुरा नहीं लगता।
घर छोटा और साधारण हो पर साफ सुथरा और व्यवस्थित हो तो कुछ भी बुरा नहीं लगता।
तन स्वस्थ और मन प्रसन्न हो तो कुछ बुरा नहीं लगता।
संयोग चाहें कितने भी प्रतिकूल हों पर भेदज्ञान हो तो कुछ भी बुरा नहीं लगता।

क्या आप भी चाहते हैं कि आपका परिवार जिनधर्म को जाने, समझे और सुखी रहे

क्या आप अपने बच्चों को जिनधर्म के संस्कार देना चाहते हैं तो

आज ही सम्पूर्ण जैन समाज की एक मात्र धार्मिक बाल पत्रिका

चहकती चेतना के सदस्य बनिये

नाम .....

पिता का नाम .....

घर का पता .....

फोन नं.....मोबाइल .....

ई-मेल .....

इनमें से एक पर निशान लगायें

☐ अवधि - तीन वर्ष - 400 रुपये ☐ अवधि - दस वर्ष - 1200 रुपये

चेक/ ड्राफ्ट / मनीआर्डर से चहकती चेतना, जबलपुर के नाम से भेजें।

चहकती चेतना

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंब

संपादक-विराग शास्त्री

सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, लाल स्कूल के पास, फूटाताल, जबलपुर 482002 म.प्र.

मोबाइल नं. - 09300642434 ई मेल - chehaktichetna@yahoo.com

सहयोग आमंत्रित

संस्था की योजनाओं में आपका आर्थिक सहयोग सादर आमंत्रित है ।

शिरोमणि संरक्षक	- 1 लाख रुपये	परम सहायक	- 21 हजार रुपये
परम संरक्षक	- 51 हजार रुपये	सहायक	- 11 हजार रुपये
संरक्षक	- 31 हजार रुपये	सहायक सदस्य	- 5 हजार रुपये
		सदस्य	- 1 हजार रुपये

प्रत्येक सहयोगी को सदस्य को छोड़कर चहकती चेतना पत्रिका का आजीवन सदस्य बनाया जायेगा । संस्था द्वारा तैयार होने वाली समस्त सी.डी. और प्रकाशन आपको निःशुल्क भेजा जायेगा । आप अपनी सहयोग राशि आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन रजि. जबलपुर के नाम से चैक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से बनाकर भेजें । आप सहयोग राशि हमारी संस्था के पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर के बचत खाता क्रमांक 1937000101026079 में जमा करा सकते हैं ।

अभिमानपूर्वक किये गये कार्यों से न श्रेय मिलता है और न शान्ति।

आचार्य कुन्दकुन्द की तपोभूमि पोन्नूर मलै में अष्टान्हिका पर्व में आयोजित

कार्यक्रम की झलकियां

बचत

शुरुआत कब हुई

31 अक्टूबर 1924 को इटली के मिलानो शहर में फर्स्ट सेविंग्स बैंक कांग्रेस(वर्ल्ड सोसायटी ऑफ सेविंग्स बैंक) की बैठक में 'वर्ल्ड सेविंग्स डे' की बुनियाद रखी गई। इटली के एक प्रोफेसर फिलिप्पो रविज्जा ने बैठक के आखिरी दिन इस दिन को अंतरराष्ट्रीय बचत दिवस(इंटरनेशनल सेविंग्स डे) के रूप में मनाने की घोषणा की।

बचत क्यों की जाए

अच्छी आदत - बचपन में आपकी सभी जरूरतें मम्मी, पापा या घर में मौजूद दूसरे लोग कर देते हैं। ऐसे समय यदि आपको कोई पैसे आदि देता है तो उसे आप अपने पिगी बैंक में संभालकर रख सकते हैं।

जरूरत के समय मदद- अगर आप थोड़े-थोड़े पैसे भी बचाते हैं, तो आगे चलकर ये छोटी बचत बड़ी रकम का रूप ले सकती है, जिससे आप जरूरत पड़ने पर इस्तेमाल कर सकते हैं या फिर किसी जरूरतमंद की मदद भी कर सकते हैं।

फालतू खर्च पर रोक - बचत करने की आदत पड़ने पर आप फिजूल की चीजों में पैसे खर्च नहीं करेंगे, क्योंकि आपको पता है कि वे केवल आपके हैं और इसीलिए उन्हें सोच-समझकर खर्च करेंगे।

पैसों का महत्व समझेंगे - इस अच्छी आदत से आपको पैसों का महत्व समझ में आने लगता है। इस तरह आप घर की चीजों की कीमत भी समझने लगते हैं।

छूटेगी जिद की आदत - जब आपको यह बात समझ में आ जाएगी कि हमें जरूरत की ही चीजें खरीदनी है, तो मम्मी-पापा से बेकार में जिद करके उन्हें परेशान नहीं करेंगे।

और दान नाम का एक कार्य श्रावक के छः आवश्यक में गिना गया है। आप स्वयं अपनी बचत में से जिनवाणी प्रकाशन में, जिनमंदिर के विशेष कार्यों में दान दे सकते हैं। इससे आपको संतुष्टि भी मिलेगी और विशेष आनंद भी।

जिनवाणी की अनसुनी करने वालों की कर्म भी नहीं सुनेगा।

रास्ता बताओ

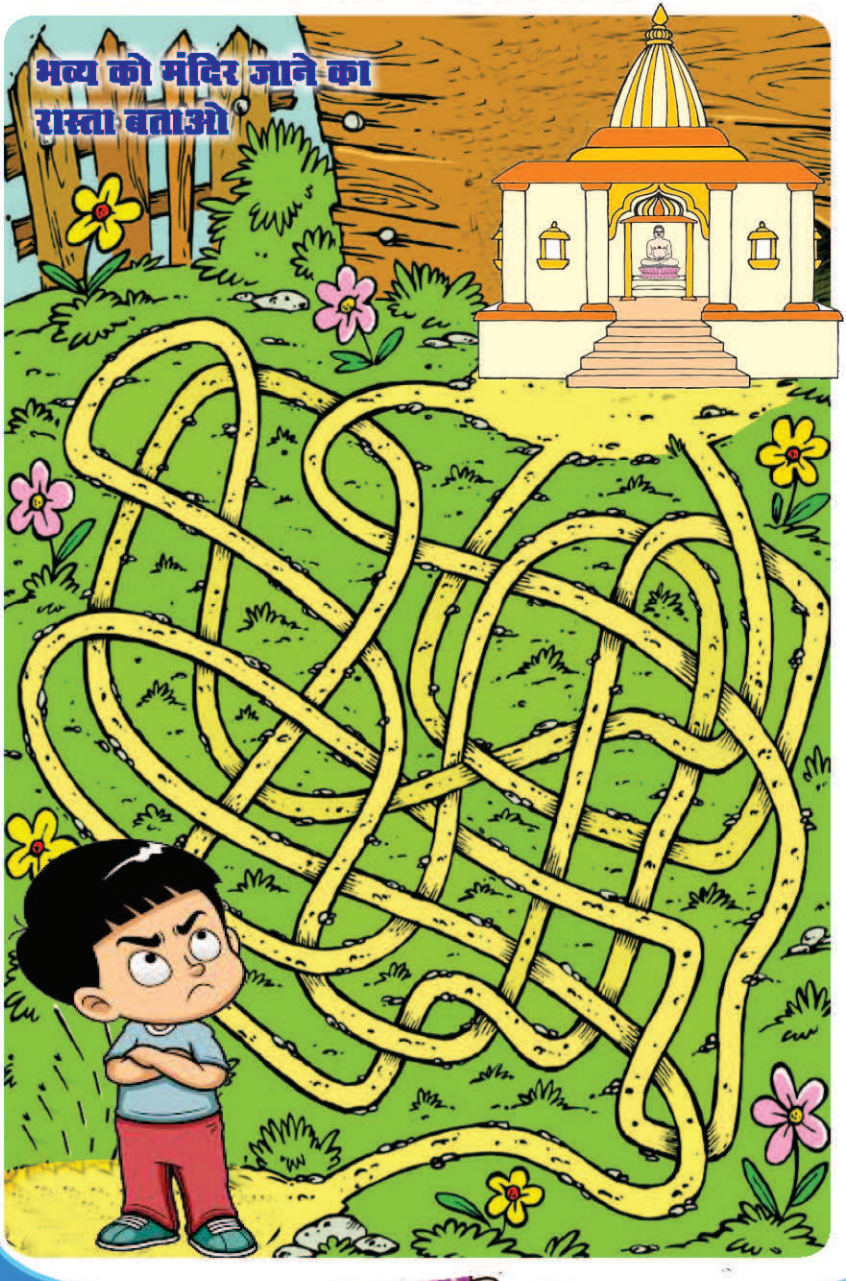

TIME/PERIOD	MONDAY	TUESDAY	WEDNESDAY	THURSDAY	FRIDAY	SATURDAY

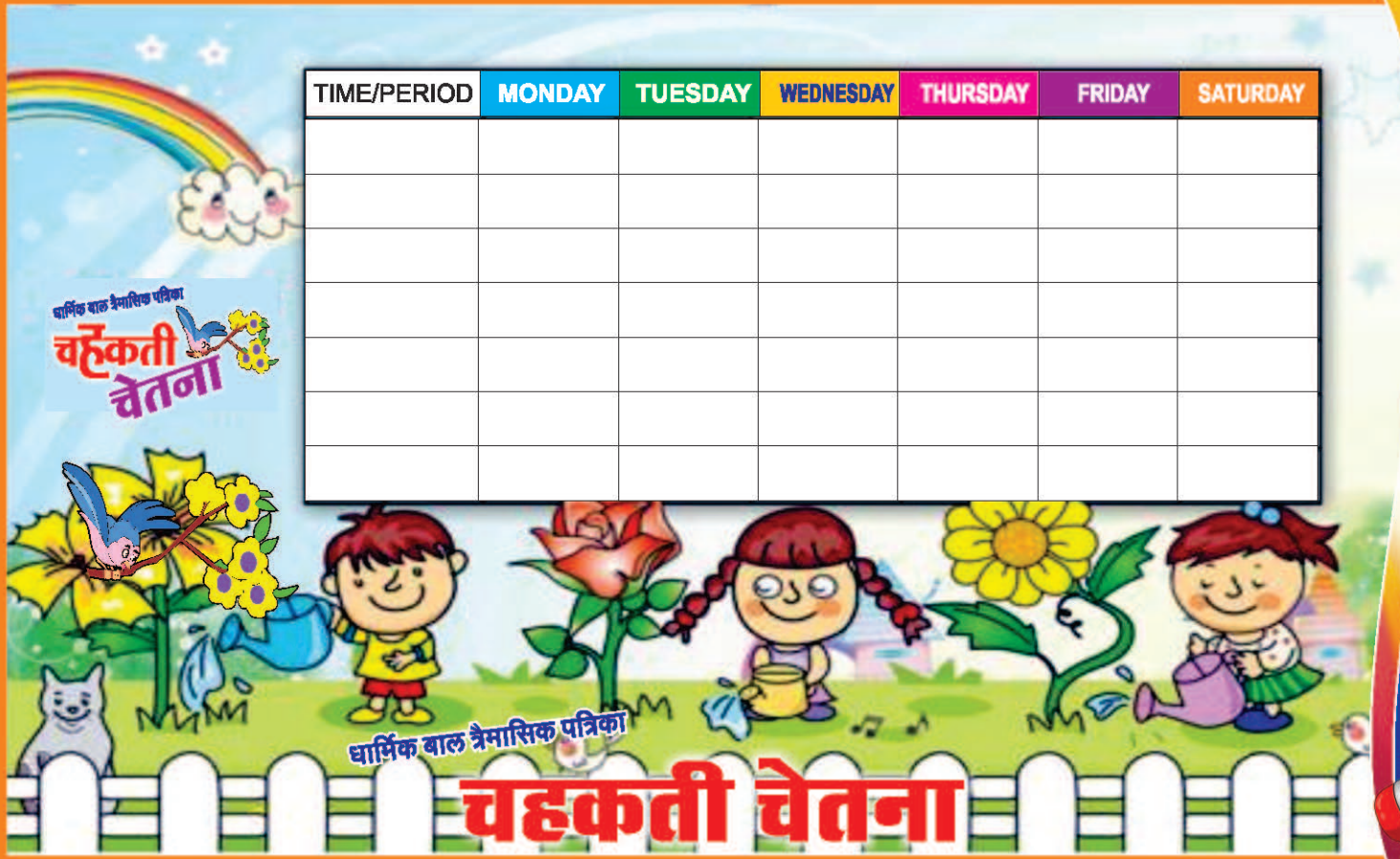

इस जीवन के सर्वोत्तम आदर्श हैं - वीतरागी देव - शास्त्र - गुरु

स्वर्ण सीढ़ी

श्रीमति वरजू बेन स्व. दलीचन्दजी हथाया मूल निवासी थाणा (चावण्ड)
वर्तमान निवासी मुम्बई के पुत्र श्री जवेरचंदजी जैन - श्री केशरदेवी के सुपुत्र
श्री प्रकाश-श्रीमति वैशाली के सुपुत्र श्री आरव के
जन्म दिवस के प्रसंग पर हार्दिक शुभकामनायें

स्व. श्री दुलीचंद जी - श्रीमती वरजूबेन हथाया

जवेरचंद जैन - श्रीमती केशरदेवी हथाया

प्रकाश - वैशाली जैन

सम्यक् मुकेश जैन

प्रशांत योगेश जैन

सारांश दिलीप जैन

जैनी मुकेश जैन

मायरा भविक जैन

मंगल अवसर पंचकल्याणक महामहोत्सव अवश्य पधारिये

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट, मुम्बई के उपनगर विलपारले-सांताक्रुज में नवनिर्मित
श्री 1008 सीमंधर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर का भव्य

श्री 1008 शांतिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

रविवार, 17 मई से शुक्रवार, 22 मई 2015 तक

मुम्बई नगरी में भव्य आयोजन

- सीमंधर स्वामी की धवल पाषाढ़ की 79 इंच प्रतिमा की स्थापना
- सोनगढ़ की लघु पाषाढ़ प्रतिकृति की स्थापना
- सोलह स्वप्नों की नवीनतम प्रस्तुति
- पूज्य गुरूदेवश्री की भवतापहारी वाणी का लाभ
- देश के उच्च कोटि के विद्वानों का समागम
- साधर्मी मिलन की मंगल घड़ी
- आध्यात्मिक एवं वैराग्यमय वातावरण
- ज्ञानवर्द्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम

निवेदक :— श्री कुन्दकुन्द—कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट, विलेपारले, मुम्बई

47, चर्च रोड, विलेपारले वेस्ट, मुम्बई 56 www.parlajinmandir.org

संपर्क : 022-26631195, 7045117135, 7045117136 Email: info@parlajinmandir.org awas@parlajinmandir.org

आप हमारी वेबसाइट http://www.parlajinmandir.org/pratishtha/awas-registration/Default.aspx पर जाकर सीधे ऑनलाइन आवास फार्म भर सकते हैं।